ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-1* February- 2021
Innovation The Research Concept

पहाड़ी चित्र शैली की उपशाखाओं में पशु पक्षी चित्रण
Animal Birds Illustration in Subdivisions of Hilltop Style

Paper Submission: 02/02/2021, Date of Acceptance: 22/02/2021, Date of Publication: 24/02/2021

नीलम कांत
विभागाध्यक्ष,
सहायक प्राध्यापक,
चित्रकला विभाग,
श्रीमती बी.डी. जैन गर्ल्स पीजी. कॉलेज, आगरा, उ0 प्र0, भारत

सारांश

भारत की दूसरी प्रमुख कला शाखा राजपूत शैली में जिसका एक रूप पहाड़ी शैली के नाम से विख्यात है इन दोनों कलाशैलियों को परम्परागत समृद्धि दी गई है राजपूत शैली यद्यपि राजस्थान के विभिन्न प्रान्तों में अपना विकास कर गई किन्तु उसका मूल उद्‌गम जयपुर समझा जाता है। राजपूत और पहाड़ी दोनों ही कलाशैलियों ने अपना स्वतंत्रत रूप से निर्माण किया फिर भी पहाड़ी शैली की अपेक्षा राजपूत शैली में कम प्रभाव एवं लोकप्रियता लक्षित होती है, उन्नीसवीं शताब्दी के निर्मित राजपूत कलाकारों के भित्ति चित्र अपना अतुलनीय स्थान रखते हैं साथ ही पहाड़ी शैली का विस्तार भी अनेक शाखाओं में हुआ जिसमें कांगड़ा शैली प्रमुख है। पहाड़ी चित्रकला का विषय क्षेत्र विस्तृत रहा है, मध्यकालीन भक्ति और श्रृंगार प्रधान जीवन का इतना सरस अन्तरंग आकर्षण व रोचक परिचय पहाड़ी शैली के चित्रों में ही दिखाई देता है रंग और रेखाओं के सौंदर्य में से प्रफ्फुलित होते हुये ये चित्र काव्य युक्त से लगते हैं।

बसोहली शैली में धार्मिक चित्रण पर आधारित पशु–पक्षी अंकन का चित्र जो लखनऊ संग्रहालय में आज भी सुरक्षित है जो भागवत पुराण से लिया गया है इसमें जीवों की उत्पत्ति के बारे में बताया है कि किस प्रकार परमात्मा ने पानी के रूप में सारी ऊर्जा को समाप्त करके एक ऊर्जा उत्पन्न की अपनी अपार शक्ति के बल से उन्होंने यह निश्चित किया कि वह फिर से सृष्टि की रचना करेंगे। गुलेर के शासकों में राजा गोवर्धन सिंह चित्रकला के असाधारण पोशक थे, लेकिन अपने पुत्र प्रकाश सिंह में उनके समान कला के प्रति उत्सुकता व रूचि न थी, वह कहना अनुचित न होगा कि प्रकाश सिंह कला के प्रति उदासीन थे इसी कारण इसी काल में चम्बा और कांगड़ा के राज्यों में कला का महत्व बढ़ रहा था, गुलेर शैली में घरेलू पशु–पक्षी के चित्रों में एक चित्र जिसमें शिव शंकर पार्वती जीको अपने परिवार के साथ चित्रित गया है जिसमें पार्वती एक धागे में छोटे–छोटे मुँह (नरमुंडमाला) को पिरो रही हैं।

बसोहली प्रभाव ग्रहण करने में चम्बा का नाम विशेष रूप से आता है अन्य पहाड़ी चित्रशैली की तरह चम्बा चित्रशेली में दो प्रकार के चित्रों की विशेषता दिखती है इसमें एक और तो रूप चित्र की और दूसरी ओर पौराणिक विषयों को लेकर सुन्दर चित्रवालियाँ तैयार हुई है। चम्बा शैली में निर्मित राधा कृष्ण को एक पेड़ की छाँव में बैठे दिखाया गया है, पास ही कुछ गायों का अंकन है। गुलेर व कांगड़ा के चित्रकारों के पास प्रातःकाल के रंग होते हैं तथा उनकी रंग तस्तरी पर इन्द्रधनुष के रंग बिखरे हैं। कांगड़ा के चित्र पहाड़ी चित्रकला के स्वर्णित नमूने है इस शैली में पशु–पक्षियों का बड़ा ही भावपूर्ण चित्रण मिलता है। वर्षा में बगुला, विरह में सारस व मोर आदि को भावना के अनुकूल चित्रित किया गया है। इसका कृष्ण ग्वालों वालों के साथ जंगल में गाय चराने जाते हुये का चित्र बहुत सुन्दर है। पहाड़ी चित्रकला शैली की उपशैलियों में गढ़वाल शैली का भी अपना महत्व है गढ़वाल शैली में बने चित्र कृष्ण बांसुरी बजा रहे हैं और गाय मुँह उठाये सुन रही है। बहुत ही संजीव अंकन चित्रकार ने प्रदर्शित किया है।

In the Rajput style, the second major art branch of India, one of whose forms is known as Pahari style, both these art galleries have been given traditional prosperity. Although the Rajput style has developed in various provinces of Rajasthan, its origin is believed to be Jaipur. Both the Rajput and Pahari art galleries built their own independently, yet the Rajput style has less influence and popularity than the Pahari style, the nineteenth-century

In the Basohli style, a picture of animal-bird marking based on religious depictions which is still preserved in the Lucknow Museum, taken from the Bhagwat Purana, describes the origin of the creatures, how God has exhausted all the energy in the form of water. By creating an energy, with the power of his immense power, he ensured that That he will create the universe again.

मुख्य शब्द : पहाड़ी चित्रशैली, कांगड़ा, गढ़वाल, चम्बा, गुलेर, पशु–पक्षी, वातावरण, कृष्ण, राधा, शिव पार्वती, गाय, सारस, मोर, धार्मिक चित्रण, पारिवारिक चित्रण।

Pahari paintings, Kangra, Garhwal, Chamba, Guler, Cattle, Environment, Krishna, Radha, Shiva Parvati, Cow, Cranes, Peacock, Religious Portraits, Family Portraits.

प्रस्तावना

पहाड़ी शैली के चित्र यद्यपि पुराणों महाकाव्यों एवं काव्यसंग्रह पर आधारित है कुछ चित्र लोक कला साहित्य और लोक आचारों पर कुछ नायिक भेद पर बने और बहुत सारे स्वर कविता रचते हुये कलाकारों ने उसी दृष्टान्त चित्रों का चित्रण किया गया। सर्वप्रथम 1916 ई0 में श्री आनन्द कुमार स्वामी ने पहाड़ी चित्रों को दो भागों में वर्गीकृत किया जिसमें उन्होंने एक उत्तरी चित्रमाला बनाई, जिसको उन्होंने कांगड़ा स्कूल के नाम से उद्घोषित किया, इस वर्ग में इन्होंने वसौली स्कूल के चित्रों को भी सम्मिलित कर लिया, इस प्रकार जिन चित्रों को उन्होंने जम्मू स्कूल का माना वे वास्तव में बसौली, नूरपुर, गुलेर और कुल्लू में प्राप्त हुये थे।[1] भारत की दूसरी प्रमुख कला शाखा राजपूत शैली है, जिसका एक रूप पहाड़ी शैली के नाम से विख्यात है इन दोनों कला शैलियों को परम्परागत समृद्धि दी गयी है राजपूत शैली यद्यपि राजस्थान के विभिन्न प्रान्तों में अपना विकास कर गई किन्तु उसका मूल उद्गम जयपुर समझा जाता है। राजपूत और पहाड़ी दोनों ही कलाशैलियों ने अपना स्वतन्त्र रूप से निर्माण किया फिर भी पहाड़ी शैली की उपेक्षा राजपूत शैली में कम प्रभाव एवं लोकप्रियता लक्षित होती है उन्नीसवीं शताब्दी के निर्मित राजपूत कलाकारों के भित्ति चित्र अपना अतुलनीय स्थान रखते हैं साथ ही पहाड़ी शैली का विस्तार भी अनेक शाखाओं में हुआ जिसमें कांगड़ा शैली प्रमुख है।[2]

पहाड़ी कला के समीक्षक एम0एस0 रन्धावा ने भी धर्म की महत्ता को स्वीकार करते हुये लिखा है – हर महान कला धर्म से प्रेरणा पाती है धर्म वह भावोद्वेग है जो मानवता को पार्थिव स्तर से ऊपर उठाता है। कांगड़ा के कलाकार महज शिल्पकार ही नहीं थे, वे भागवत पुराण, रामायण, महाभारत, बारहमासा, रागमाला, कृष्णलीला और नायक नायिका सम्बन्धी चित्रों के कुशल चित्रकार भी थे इसके अतिरिक्त नल दमयन्ती और सत्यवान सावित्री जैसी कथाओं को भी पहाड़ी चितेरों ने चित्रित किया। रामायण सम्बन्धी चित्र आकार में अन्य चित्रों की बड़े और उनमें आकृतियों के अतिरिक्त वनस्पतियों व पशु पक्षियों का चित्रण भी बड़े ही मनोहारी ढंग से प्रस्तुत किया गया है पहाड़ी चित्रकला का विषय क्षेत्र विस्तृत रहा है मध्यकालीन भक्ति और श्रंगार प्रधान जीवन का इतना सरस अन्तरंग आर्कषण व रोचक परिचय पहाड़ी चित्रों में ही दिखाई पड़ता है राधा कृष्ण को लक्ष्य बनाकर जीवन की इतनी बहुविधि लीलाओं का आलेखन हुआ है कि लगता है कि जीवन का शायद ही कोई पक्ष छूटा हो। रंग और रेखाओं के सौन्दर्य में से प्रफुल्लित होते हुये ये चित्र काव्ययुक्त से लगते हैं।[3] पहाड़ी चितेरों ने भक्त कवियों के विभिन्न पदों का स्मरण कर अपनी कल्पना, आस्था और विश्वास का सम्बन्ध लेकर सुन्दर चित्रों का सृजन किया तथा कृष्ण लीला ने उनकी कल्पना को सहेजा उनकी आस्था को गहाराया और उनके कलात्मक मानस को अनुप्राणित व अनुप्रेरित किया।[4]

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा पहाड़ी चित्रशैली में निर्मित पशु–पक्षी चित्रण के कार्य से सबको अवगत कराना व चित्रों की पहाड़ी शैली की उपषाखाओं में बने चित्रकारी द्वारा पशु–पक्षियों के चित्रण को दर्शाना है।

विषय विस्तार

कृष्ण जन्म से सम्बन्धित एक चित्र पंजाब संग्रहालय पटियाला में सुरक्षित है जो कृष्ण जन्म पर आधारित है इसमें भगवान कृष्ण को अवतारी पुरूष के रूप में दर्शाया गया है, जिसमें देवकी और वासुदेव हाथ जोड़े खड़े हुये हैं, उनको देखकर यह प्रतीत हो रहा है कि वे प्रार्थना कर रहे हैं। इस चित्र में द्वारपाल को सोते हुये दिखाया गया है तथा द्वार पर दो कुत्तों को भी चित्रित किया गया है एक भूरे रंग का दूसरा सफेद रंग का। दोनों कुत्ते सो रहे हैं एक कुत्ता सीधे मुँह किए हुये तथा दूसरा कुत्ता पीछे मुँह किये हुये, जो बड़े ही कलात्मक ढंग से चित्रित है दोनों के गले में लाल रंग की पट्टी बंधी हुई है इनकी आँखें नुकीली हैं जो बनावटी सी प्रतीत हो रही हैं ऐसा लग रहा है कि ये दोनों कुत्ते द्वारपालों के साथ पहरा दे रहे हैं और द्वारपाल सिपाहियों के साथ पहरा देते – देते इनको भी नींद आ गई है।[5]

(चित्र संख्या – 1)

पहाड़ी शैली में चित्रित चित्र जिसमें शंकर पार्वती व उनके पुत्र गणेश और तीनमुख और छः हाथ वाले देवता कार्तिकेय सहित भगवान शिव को भाँग छानते हुये दर्शाया गया है। भगवान शंकर व देवी पार्वती अपने कार्य भांग छानने में व्यस्त हैं दोनों एक कपड़े के दोनों छोर को पकड़ते हुये भांग छान रहे जो एक छोटी सी प्याली में गिर रही है बालक कार्तिकेय जो पार्वती के समीप खड़े हुये हैं, वह प्याली को आगे करके भांग मांगने की चेष्टा करते हुये दर्शाया गया है भगवान शिव को अपने परिवार के साथ एक वृक्ष के नीचे बैठे दिखाया गया है उन्हीं के समीप सोते हुये शेर व नन्दी जो शेर के मुख पर मुँह रखे हुये सो रही है चित्रित किया है तथा इस चित्र में एक बन्दर को भी दिखाया है जो स्पष्ट नहीं है शायद कुछ

खा रहा है दूर छोटे–छोटे पहाड़ व ऊँची–ऊँची चोटियों को भी चित्रित किया गया है चित्र में काले, पीले, सफेद, भूरे, हरे रंग का प्रयोग किया गया है बहुत ही मनोहारी चित्रण है। घरेलू वातावरण पर आधारित इस चित्र में पशुओं को सहचर के रूप में कलाकार ने चित्रण किया है। पहाड़ी शैली के दरबारी चित्रण में भी गाय, मोर, सारस, तोता, मैढ़कों, बिजली की चमक व पेड़ लताओं की भावनाओं को कृष्ण और राधा के प्रेम सौन्दर्य के प्रतीक में दिखाया गया है।

(चित्र संख्या – 2)

बसोहली शैली में धार्मिक चित्रण पर आधारित पशु पक्षियों अंकन का चित्र जो लखनऊ संग्रहालय में आज भी सुरक्षित है जो भागवत पुराण से लिया गया है इसमें जीवों की उत्पत्ति के बारे में बताया है कि किस प्रकार परमात्मा ने पानी के रूप में सारी ऊर्जा को समाप्त करके एक ऊर्जा उत्पन्न की अपनी अपार शक्ति के पक्ष से उन्होंने यह निश्चित किया कि वह फिर से सृष्टि की रचना करेंगे इस चित्र में पशुपक्षियों का चित्रण स्पष्टरूप का नहीं है देखकर ऐसा लग रहा है कि एक घोड़ा मुँह खोले हुये है और उस घोड़े के दांत और जीभ बाहर निकले हैं केवल मुँह ही दिख रहा है उसका सम्पूर्ण शरीर छिपा हुआ है उसी में बाज पक्षी के पंजे जैसे पैर दिख रहे हैं तथा एक जगह सुअर तथा चूहे का मुख भी दिख रहा है परन्तु चित्र में दृश्य पूर्णरूप से स्पष्ट नहीं है। इस चित्र में पाप को दर्शानें के लिए कलाकार ने क्रूर से क्रूर पशु व पक्षी की आकृतियों का चित्रण किया है तथा पाप को भयंकर रूप में दर्शानें में पूर्ण सफलता प्राप्त की है प्रत्येक पशु व पक्षी के चित्रण में उनके चेहरों को बड़ी–बड़ी आँखों तथा बड़े–बड़े दाँतों के साथ चित्रित किया है जो पाप की भयानता को प्रकट करता है।[6]

(चित्र संख्या – 3)

बसोहली शैली में निर्मित एक अन्य चित्र जो कृष्ण व ग्वाल वालों के साथ का है जिसे देखकर लगता है कि जंगल में आग लगी हुई है और सबकी रक्षा के लिए कृष्ण ने अपनी शक्ति को दृष्यांकित किया है बीच में कृष्ण भगवान खड़े हैं सभी गाय और ग्वाल बाल मोर, चिड़िया, हिरन उनके समीप खड़े हुये हैं ग्वाल बाल ने डर के कारण अपनी आँखे बंद कर रखी है इन सबको एक गोले में समेटे हुये कृष्ण के साथ दर्शाया गया है देखकर लगता है कि आग के लपटें आकाश को छूने जा रही हैं और भगवान कृष्ण सबकी रक्षा कर रहे हैं चित्र में रंगों का सुन्दर प्रयोग लाल, पीले, सफेद, काले, हरे, भूरे आदि रंगों का संयोजन आकर्षित करने वाला है पशु चित्रण का अनोखा दृश्य इस चित्र में दर्शाया गया है।[1]

(चित्र संख्या – 4)

बसोहली शैली में निर्मित हिमालय पर्वत के चित्रण में पूर्व से आने वाली हवाएं हिमालय पर्वत से टकराती हैं और सारे वातावरण को ठंडा कर देती हैं इस चित्र में हिमालय को बड़ा रंगीन और बनावटी सा चित्रित किया गया है पर्वत के बीचों–बीच में आम के पेड़ों को दिखाया गया है जो दिखने में बनावटी से प्रतीत हो रहे हैं पीछे को पृष्ठभूमि में आम व चंदन के वृक्षों पर रंगीन सर्प लिपटे दिखाये गये हैं इस चित्र को देखकर ऐसा लगता है जैसे यह चित्र कलाकार ने अपनी कल्पना के आधार पर सृजित किया हो, पीछे की पृष्ठभूमि नीली है आसमान में एक रेखा सी खींची हुई सर्प चित्रण बनावटी लग रहा है पूरा प्राकृतिक वातावरण बनावटी सा चित्रित किया गया

है। घने वृक्ष पहाड़ी के पीछे अंकित है चित्र में चटख रंग लाल, पीला, नीला, सफेद, काला, ग्रे तथा गुलाबी ब्राउन का प्रयोग मनोहारी लग रहा है।[7]

(चित्र संख्या – 5)

वसोहली शैली में निर्मित चित्र उस समय का है, जिस समय राम लक्ष्मण और सीता अयोध्या लौट रहे थे, एक तरफ सिंहासन पर बैठे भरत बैठें हैं अपने भाई से मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं एक मंत्री उन्हें संदेश दे रहा है बीच में पेड़ बड़ा ही कलात्मक ढंग से बना है पेड़ की शाखायें बनावटी सी लग रही हैं। पीछे की पृष्ठभूमि हरी है इस चित्र में भरत व मंत्री सभी के वस्त्र मुगल काल के लग रहे हैं आँखें नुकीली बनी हैं। राम, लक्ष्मण, सीता आभूषणों में सुसज्जित हैं। रथ को लक्ष्मण चला रहे हैं पीछे राम साथ में माता सीता बैठी हैं एक तरफ अयोध्या दिखाई गई है जहाँ दरबारी राम जी से हाथ जोड़े हुये हैं कुछ कहने की दशा में है और श्रीराम चन्द्र जी बड़े मनोभाव से उसकी बात सुन रहे हैं दूसरी तरफ भरत से एक द्वार पाल से कुछ कह रहा है लगता है जैसे राम के आने का सन्देश्ष दे रहा है और भरत अपने भाई के आने की प्रतीक्षारत दिख रहें है इस चित्र में पक्षियों का अकन कहीं नहीं हुआ है केवल दो घोड़े चित्रित किये हैं एक घोड़ा सफेद रंग का है तथा दूसरा काले रंग का जो पैर उठाये हैं और तेजी से भाग रहे हैं। वे दोनों ही घोड़े सुसज्जित है दाँत और जुबान बाहर की ओर निकली हुई तथा आँखें गोल व बड़ी–बड़ी दिखाई गई हैं चित्र में धरातल सपाट, पीली मिट्टी युक्त रंग से बना है ब्राउन, हरा, लाल, सफेट, नीला, गुलाबी व काले रंगों का प्रयोग किया गया है चित्र बहुत सुन्दर है।[8]

(चित्र संख्या – 6)

गुलेर के शासकों में राजा गोवर्धन सिंह चित्रकला के असाधारण पोषक थे लेकिन अपने पुत्र प्रकाश सिंह में उनके समान कला के प्रति उत्सुकता व रूचि न थी, यह कहना अनुचित न होगा कि प्रकाश सिंह कला के प्रति उदासीन थे इसी काल में चम्बा और काँगड़ा के राज्यों में कला का महत्व बढ़ रहा है गुलेर के राजा गोवर्धन सिंह का सन् 1773 में देहान्त हो गया था।[9] गुलरे शैली से सम्बन्धित घरेलू पशु–पक्षी के चित्रों में एक चित्र जिसमें शिव शंकर पार्वती जी को अपने परिवार के साथ चित्रित किया गया है जिसमें पार्वती एक धागें में छोटे–छोटे मुँह (नरमुंडमाला) को पिरो रही हैं वहीं एक तरफ षड़ायन कार्तिकेय भाले को पकड़े हुये हैं पास ही मोर व नन्दी भी बैठे चित्रित है पास ही में श्री गणेश और उनका वाहन चूहा भी अंकित है चित्र पूर्ण रूप से स्पष्ट व बहुत सुन्दर चित्रित किया हुआ है।

(चित्र संख्या – 7)

गुलेर शैली के एक अन्य चित्र में महाराजा गोबर्धन अपने हाथों में एक बाज के लिए चित्रित है पीछे राजा के सेवक पंखा कर रहा है बाज को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि राजा बाज को न्याय दिलाने के लिए सिंहासन पर बैठा है इस चित्र में हल्के रंगों का प्रयोग किया गया है जैसे – सफेद, हल्का भूरा, लाल, आसमानी, कला इत्यादि।[10]

(चित्र संख्या – 8)

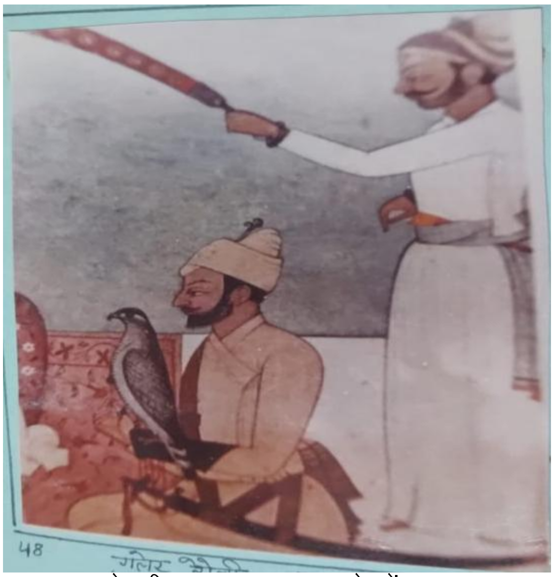

बसोहली प्रभाव ग्रहण करने में चम्बा का नाम विषेष रूप से आता है अन्य पहाड़ी चित्रशैली की तरह चम्बा चित्र शैली में दो प्रकार के चित्रों की विशेषता दिखती है एक ओर तो रूप चित्र है और दूसरी ओर पौराणिक विषयों को लेकर सुन्दर चित्रबालियाँ तैयार हुई है। इन चित्रों की खास विशेषता यह है कि ये चित्र प्रोफाइल शैली में है। पहाड़ी कलम के लघुचित्रों की तरह चम्बा भित्ति चित्र केवल धार्मिक विषयों तक ही सीमित नहीं रह गये हैं मुख्य विषय राधा और कृष्ण की प्रेमलीला, शिव पार्वती, राजदरबार, संगीत के प्रति उन्मुख स्त्रियाँ, केशविन्यास यशोषा कृष्ण, स्नान करती गोपियाँ हिरणों व पक्षियों को खिलाती युवतियाँ, युगल प्रणय इत्यादि चित्रों का अंकन भी बड़ी कुशलता के साथ प्रदर्षित किया है।[11] चम्बाशैली में निर्मित राधा कृष्ण को एक पेड़ की छाँव में बैठे दिखाया गया है पास में एक गाय उनके दुपट्टे के पास तक जा रही है पीछे दो गायें खड़ी हैं एक चरवाहा इन गायों को चरा रहा है सभी गायों के मुँह श्रीकृष्ण राधा की ओर है दो गायें नदी के जल की ओर जाने से ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे वे प्यासी हैं और पानी पीने जा रहीं हैं चित्र बहुत सुन्दर लताओं से सुसज्जित है चित्र में नारंगी, सफेद, पीला, काला, ब्राऊन, नीला, पीला रंग का जोड़ बहुत लुभावना है चित्रकार ने अपने भावों का सुन्दर प्रदर्शन किया है।[12]

(चित्र संख्या – 9)

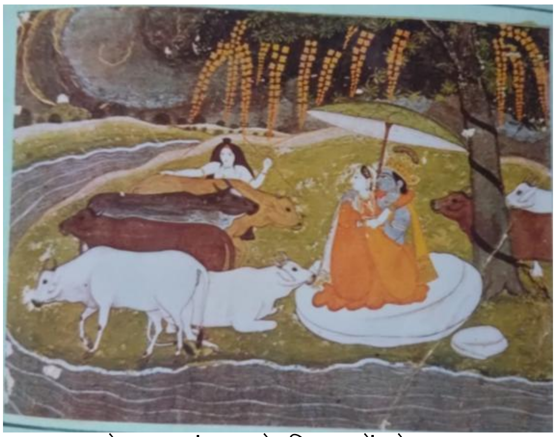

गुलेर व कांगड़ा के चित्रकारों के पास प्रातःकाल के रंग होते तथा उनकी रंग तस्तरी पर इन्द्रधनुष के रंग बिखरे हैं।[13] कांगड़ा के चित्र पहाड़ी चित्र कला के स्वर्णिम नमूने हैं सामान्यतः पहाड़ी चित्रकला को ही कांगड़ा शैली के नाम से जाना गया है। 16वीं शताब्दी से सेकर 19वीं शताब्दी तक पहाड़ी क्षेत्रों में जो कला आन्दोलन चला था, उसका प्रतिफल कांगड़ा शैली हैं। यह चित्रश्शैली कांगड़ा के राजा संसार चन्द के राज्यकाल की देन है कांगड़ा के राजा धर्मचन्द और उसका पौत्र संसार चन्द बड़े प्रभावशाली तथा कला प्रिय शासक थे। इन्हीं के संरक्षण में कांगड़ा शैली का उद्भाव एवं विकास हुआ। इस शैली में पशु–पक्षियों का बड़ा भावपूर्ण चित्रण मिलता है।वर्षा में बगुला, विरह में सारस या मोर आदि को भावना के अनुकूल चित्रित किया गया है। कृष्ण के साथ गायों का सजीव चित्रण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कांगड़ा शैली पर आधारित चित्र जिसमें कृष्ण ग्वालवालों के साथ गाय चराने जंगल जाते हैं सम्पूर्ण वातावरण हरा भरा है। हरे–हरे पेड़ और सुन्दर फूल, घास, नदी का तट कुछ ग्वाल वाल नदी के जल से अपना कार्य कर रहे हैं और कुछ पेड़ पर चढ़कर वानरों को बुला रहे जो डर के कृष्ण दूर भाग रहे हैं और कुछ ग्वाल वाल गाय चरा रहे हैं दूर बसा बसाया गाँव दिख रही है। जल में जल पक्षी नहा रहे हैं गायों का झुण्ड बहुत सुन्दर दिख रहा है चित्र स्पष्ट व रेखाकंन बड़ा ही सुन्दर है हरे, भूरे, पीले, काले, नारंगी, लाल रंगों का प्रयोग किया गया है। कृष्ण पीले रंग का पीताम्बर पहने और सुन्दर मुकुट धारण किये हुये दिखाया है।[14]

(चित्र संख्या – 10)

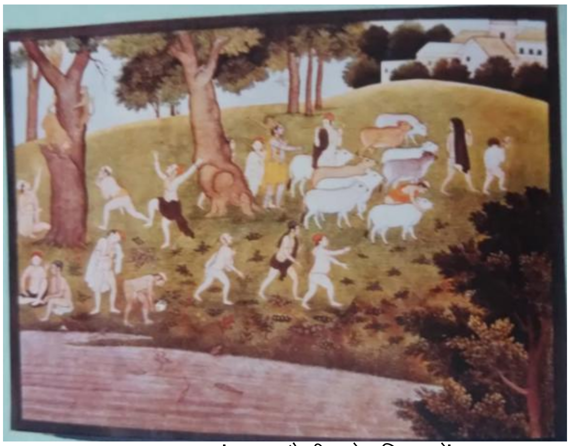

एक अन्य कांगड़ा शैली के चित्र में कृष्ण गाय चराने जाते हैं तो भोजन के समय सभी ग्वाल वाल एक जगह एकत्रित होते हैं और साथ बैठकर प्रेमपूर्वक भोजन करते थे। कृष्ण एक ग्वाले से कुछ कर रहे हैं जिसे वह ध्यानपूर्वक सुन रहा है। नदी की धारा तेजी से निकल रही है पेड़ों का सुन्दर चित्रण है गाय एक स्थान पर जंगल की घास खा रहीं है सभी गायों की लम्बाई, मोटाई एक समान लग रही है जो देखने में बहुत सुन्दर चित्रित है, इस चित्र में हरे रंग का प्रयोग मुख्यरूप से हुआ है। लाल, नारंगी, पीले, भूरे, सफेद, नीले रंगों का प्रयोग बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है चित्रकार ने बड़ी ही सटीकता के साथ रेखांकन को बल दिया है दृश्यचित्रण बहुत उत्कृष्ट कोटी का है।[15]

(चित्र संख्या – 11)

पहाड़ी चित्र कला शैली की उपशैलियों में गढ़वाल शैली का भी अपना महत्व है गढ़वाल शैली में चित्रकला के निर्माण का दूसरा उद्योग अठारहवीं शताब्दी के मध्यकाल से मोलाराम की रचनाओं से आरम्भ होता है। भोलाराम यद्यपि उक्त मुगल चित्रकार के अन्तिम दिनों से ही चित्रकारी कर रहा था।सुलेमान शिकोह, रामदास तथा उसका पुत्र हरदास – भोलाराम के पूर्वज थे।[16]

गढ़वाल शैली में बने चित्र में कृष्ण बांसुरी बजा रहे हैं और गायें मुँह उठाये सुन रही है तथा उनकी आँखों में चमक व प्रसन्नता है। जब कृष्ण बांसुरी बजाते हैं तो चारों तरफ वातावरण शान्त हो जाता है गायें कृष्ण की बांसुरी की धुन सुन–सुन कर भागती हुई आ रही है पेड़ों को बहुत पास–पास चित्रित किया गया है हरे भरे पेड़ फूल का सुन्दर चित्रण है पेड़ पर मोर को बैठे दिखाया गया है गायों को बहुत व्याकुल कृष्ण बांसुरी बहुत में लग्न चित्रित किया गया है। चित्र बेहद खूबसूरत है रंग विन्यास का विषेष ख्याल रखा है बहुत ही संजीव अंकन चित्रकार ने प्रदर्शित किया है।

(चित्र संख्या – 12)

निष्कर्ष

पहाड़ी चित्र शैली के चित्रण में पहाड़ी चितेरों ने खूब जीवन जीया चाहे वो धार्मिक चित्रण हो या सामाजिक व पारिवारिक सभी तरह के चित्रण पहाड़ी कलाकारों का रूचिकर विषय रहा और उन्होंने मानवाकृति से लेकर पशु पक्षी चित्रण व प्राकृतिक वादियों को चित्रण करने में वह मन और आत्मा से जिया है पहाड़ी चित्रशैली की उपशैलियों में बसोहली, कांगड़ा, गढ़वाल, चम्बा गुलेर इत्यादि में चित्रकार ने पशु पक्षी का अंकन का बेजोड़ चित्रण करके उसे संजीवता प्रदान में सिद्धहस्तता हासिल की है। प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से पहाड़ी चित्रशैली की विभिन्न उपशाखाओं पशु पक्षी चित्रण का संजीव अंकन उनकी महत्वता पर प्रकाश डालना ही मुख्य उद्देश्य रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वर्मा अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास अध्याय 6, पृ0सं0 189*
2. *गैरोला वाचस्पति : भारतीय चित्रकला अध्याय 16, पृ0सं0 – 239*
3. *किशोरी लाल वैद्य : पहाड़ी चित्रकला : अध्याय 4, पृष्ठ सं0 34, 35*
4. *किशोरी लाल वैद्य : पहाड़ी चित्रकला : अध्याय 7, पृष्ठ सं0 70*
5. *एम0एस0 रन्धावा : बसोहली शैली : प्लेट – 7, पृष्ठ सं0 50*
6. *एम0एस0 रन्धावा –बसोहली पेटिंग – प्लेट – 04, पृष्ठ सं0 45*
7. *एम0एस0 रन्धावा : इण्डियन मिनिसचर पेटिंग – पृष्ठ सं0 4, 8*

8. एम0एस0 रन्धावा : बसोहली पेटिंग, प्लेट – 21, पृष्ठसं0 78
9. किशोरी लाल वैद्य : पहाड़ी चित्र कला : अध्याय 2, पृष्ठसं0 101
10. अविनाश बहादुर : भारतीय चित्र कला का इतिहास : अध्याय 6, पृष्ठसं0 241
11. एम0एस0 रन्धावा – बसोहली पेटिंग – प्लेट 16, पृष्ठ सं0 68
12. किशोरी लाल वैद्य : पहाड़ी चित्रकला, अध्याय 4, पृष्ठ सं0 113, 114, 117
13. एम0एस0 रन्धावा : इण्डियन सीनियर पेटिंग – पृष्ठ सं0 117
14. एम0एस0 रन्धावा : इण्डियन सीनियर पेटिंग, पृष्ठसं0 99
15. एम0एस0 रन्धावा : इण्डियन सीनियर पेटिंग, पृष्ठ सं0 12
16. एम0एस0 रन्धावा : इण्डियन सीनियर पेटिंग, पृष्ठ सं0 12
17. वाचस्पति गैरोला : भारतीय चित्र कला, अध्याय 11, पृष्ठ सं0 216